- खुर के घाव में हिमैक्स या नीम के तेल का प्रयोग करें जिससे की मक्खी नहीं बैठे क्योंकि मक्खी के बैठने से कीड़े हो सकते है।
- इस दौरान पशुओं को मुलायम एवं सुपाच्य भोजन दिया जाना चाहिए।

रोग की रोकथाम

- संक्रमित पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिए।
- संक्रमित पशुओं के आवागमन पर रोक लगा देना चाहिए।
- बीमार पशुओं की देख–भाल करने वाले व्यक्ति को भी स्वस्थ पशुओं के बाड़े से दूर रहना चाहिए।
- नये पशुओं को झुंड में मिश्रित करने से पूर्व सीरम से उसकी जाँच अवश्य करना चाहिए।
- नए पशुओं को कम से कम दो सप्ताह तक अलग बाँध कर रखना चाहिए तथा भोजन एवं अन्य प्रबन्धन भी अलग से ही करना चाहिए।

टीकाकरण

- इस बीमारी से बचाव के लिए पशुओं को वर्ष में दो बार प्रत्येक 6 महीने में नियमित टीके अवश्य लगवाने चाहिए।
- पशुशाला को साफ–सुथरा रखना चाहिए।
- संक्रमित पशुओं को पूर्ण आहार देना चाहिए। जिससे खनिज एवं विटामीन की मात्रा पूर्ण रूप से मिलती रहे।
- इस बीमारी से मरे पशु के शव को खुला न छोड़कर गड्ढे में गाड़ देना चाहिए।

शैक्षणिक भवन

प्रशासनिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

डॉ. एस.एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : +91–789746699

ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/59

पशुओं में खुरपका-मुँहपका (एफएमडी) रोग

डॉ. प्रमोद कुमार सोनी

डॉ. वी.पी. सिंह

प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

पशुओं में खुरपका-मुँहपका (एफएमडी)रोग

खुरपका–मुंहपका रोग पशुओं में अत्याधिक तेजी से होने वाला एक संक्रामक विषाणु जनित रोग है। इस रोग को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे की एफ.एम.डी, खरेडू, चपका, खुरपा आदि। यह रोग गाय, भैस, भेड़, बकरी, ऊँट, सुअर, हाथी इत्यादि में होने वाला एक छूत की बीमारी है, खासकर दुधारू गाय एवं भैंस में यह रोग अधिक नुकसान दायक होता है। विदेशी व संकर नस्ल की गायों में यह रोग अधिक गम्भीर रूप से पाया जाता है। इस बीमारी से अपने देश में प्रतिवर्ष लगभग 20 हजार करोड़ रूपये की प्रत्यक्ष नुकसान होता है।

रोग का कारण एवं संक्रमण

- खुरपका–मुँहपका एक बहुत ही प्रचलित विषाणु (पिकोरना) जनित रोग है।
- यह रोग बीमार पशु के सीधे सम्पर्क में आने, पानी, घास, दाना, बर्तन, दूध निकलने वाले व्यक्ति के हाथों से, हवा से फैलते हैं।
- संक्रमण कांल की अवधि – खुरपका–मुंहपका के लिए संक्रमण काल 3–7 दिन होता है।
- ये विषाणु जीभ, मुंह, खुरों के बीच की जगह, थनों, आंत तथा घाव आदि के द्वारा स्वस्थ पशु के रक्त में पहुंचते हैं तथा लगभग 5 दिनों के अंदर उसमें बीमारी के लक्षण पैदा करते है।
- पशु की रोग प्रतिरोधक शक्ति का कमजोर होना, आस पास के क्षेत्र में रोग का प्रकोप, बाहरी वातावरण मे अधिक नमी होना तथा पशुओं एवं लोगों का आवागमन इस रोग को फैलाने का कारण हो सकते हैं।
- ये विषाणु घास, चारा, तथा फर्श पर तीन से चार महीनों तक जीवित रह सकते हैं।

रोग के लक्षण

- इसे प्रभावित होने वाले जानवर मे अल्प अवधि का तेज बुखार (104–106 °F) आता है।
- मुंह के अंदर, जीभ, होंठ तालू व मसूड़ों के अंदर, खुरों के बीच तथा थनों पर छाले पड़ जाना।
- रोगी पशुओं के मुंह से अधिक पारदर्शी लार गिरती है।
- भूख कम लगना, जुगाली कम करना, अधिक प्यास, कमजोरी भी इस रोग के लक्षण हैं।
- छाले फटने के बाद घाव बन जाना।
- पैरो मे घाव के कारण पशु का लंगड़ा कर चलना, दूध उत्पादन में गिरावट।
- गर्भवती पशुओं में गर्भपात की संभावना बनी रहती है।

रोग की जाँच

- सर्वप्रथम हिस्ट्री और लक्षणों के आधार पर इस रोग की जाँच की जाती है।
- **लक्षण**– तेज बुखार, मुँह के अंदर, जीभ, होंठ तालू व मसूड़ों के अंदर, खुरों के बीच तथा थनों पर छाले पड़ जाना आदि।
- **प्रयोगशाला परीक्षण**– मुँह एवं खुर का घाव, दूध इत्यादि को निकटतम प्रयोगशाला में 50 प्रतिशत बफर ग्लिसरीन में रखकर जाँच हेतु जल्द से जल्द भेंजे या निकटतम केंद्र पर तुरंत सूचित करें।

रोग का उपचार

- इस रोग का कोई निश्चित उपचार नहीं है सिर्फ लक्षणों के आधार पर पशु का उपचार किया जाता है।
- रोग के लक्षण आरम्भ होने के पश्चात् पशु चिकित्सक की सलाह लें।
- संक्रमित पशु में द्वितीयक संक्रमण को रोकने के लिए उसे एंटीबायोटिक दवाओं आदि 5 या 7 दिन तक दिये जा सकते है।
- मुँह व खुरों के घावों को 1 प्रतिशत फिटकरी अर्थात 1 ग्राम फिटकरी 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर दिन में तीन बार धोना चाहिए।
- मुँह में बोरो–गिलिसरीन तथा खुरों में किसी एंटीसेप्टिक लोशन का प्रयोग किया जा सकता है।